भारतीय लोक नृत्यों का महत्वपूर्ण रूप लावणी नृत्य

डॉ. श्रुति होड़ा

भारतीय संस्कृति की नीव है लोक संस्कृति के चतुरंग है– साहित्य, संगीत, चित्रकला तथा नृत्यकला मानव और इन कलाओं का संबंध अनादि काल से चला आ रहा है। संस्कृति के चतुरंग में नृत्यकला को बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है किसी भी अंचल की संस्कृति को समझने के लिए सर्वप्रथम उस अंचल की लोक संस्कृति को जानना होगा।

लावणी संगीत की एक विधा है जो प्रमुख रूप से भारतीय राज्य महाराष्ट्र में प्रसिद्ध है। लावणी महाराष्ट्र राज्य की लोक नाट्य शैली तमाशा का अभिन्न अंग है। आज इसे महाराष्ट्र के सबसे लोकप्रिय और प्रसिद्ध लोक नृत्य शैली के रूप में माना जाता है। लावणी नृत्य वीरता, प्रेम, भक्ति और दुख जैसी भावनाओं को प्रदर्शित करने के लिए यह शैली उपयुक्त है। संगीत, कविता, नृत्य और नाट्य सभी मिलकर लावणी बनाते है। इन का समिश्रण इतना बारीक होता है कि इनको अलग कर पाना लगभग असम्भव है। एक परम्परा के अनुसार शब्द लावणी शब्द लावण्या जो सुन्दरता अर्थ से ली गई है। अतः यू भी कह सकते है सौन्दर्यानुभूति लास्य कला का दर्शन कराने वाला लावणी महाराष्ट्र का अत्याधिक लोकप्रिय नृत्य है। लास्य रस का अर्थ ही है श्रृंगार का परिपोषक।